परवरदिगार प्रार्थना

(मेहेरबाबाने दी हुवी प्रार्थना)

हे परवरदिगार !

सबके राखनहार और सबकी रक्षा करनेवाले ! तुम्हारा कोई आदि नहीं है और न तुम्हारा कोई अन्त है; तुम अद्वैत हो, तुम तुलनासे परे हो, और तुम्हारा पार कोई नहीं पा सकता है ।
तुम्हारा कोई रंग और कोई रूप नहीं है; तुम आविर्भाव से रहित हो, और तुम गुणातीत हो ।
तुम अपार हो और अगाध हो, कल्पना और धारणासे परे हो, शाश्वत और अनश्वर हो ।
तुम अखण्डनीय हो, और दिव्य नेत्रोंके सिवाय और किसीभी प्रकारसे तुम्हें कोई नही देख सकता है ।
तुम्हारा अस्तित्व सदैव था, तुम सदैव रहते हो, और तुम सदैव रहोगे ।
तुम सर्वत्र हो, तुम हर वस्तुमें हो; और तुम हर जगहसे परे तथा हर वस्तुसे परे भी हो ।
तुम आकाशमें हो और पातालमें हो, तुम व्यक्त हो और अव्यक्त हो; तुम सब लोकों पर हो और समस्त लोकोंसे परे हो ।
तुम तीनो भुवनोंमे हो, और तीनों भुवनोंसे परे भी हो । तुम अगोचर हो और स्वतन्त्र हो ।
तुम सृष्टीके रचनेवाले हो, स्वामियोंके स्वामी हो, समस्त मनों और हृदयोंके ज्ञाता हो; तुम सर्व शक्तिमान हो और सर्वव्यापी हो ।
तुम अनन्त ज्ञान हो, अनन्त शक्ति हो, और अनन्त आनन्द हो ।
तुम ज्ञानके महासागर हो, सर्वज्ञ हो, अनन्त ज्ञान रखनेवाले हो; तुम भूत, वर्तमान और भविष्यके ज्ञाता हो; और तुम स्वयं ज्ञान हो ।
तुम पूर्ण दयामय हो और सदैव हितकारी हो ।
तुम आत्माओंकी आत्मा हो, और अनन्त गुणोंसे सम्पन्न एक परमात्मा हो ।
तुम सत्य, ज्ञान और परमानन्दकी त्रिमूर्ति हो ।

तुम सत्यके मूल हो, प्रेमके महासागर हो ।
तुम सनातन सत्ता हो, ऊँचों में सबसे ऊँचे हो ।
तुम प्रभु और परमेश्वर हो; तुम परब्रह्म हो, और परात्पर ब्रह्म भी हो;
तुम परब्रह्म परमात्मा हो, अल्लाह हो, इलाही हो, यज़्दान हो,
अहूरमज़्द हो, और प्रियतम ईश्वर हो ।
तुम्हारा नाम इज़्ज़द, अर्थात् एकमात्र पूज्य है ।

पश्चात्ताप प्रार्थना
(मेहेरबाबाने दी हुवी प्रार्थना)

हे असीम दयाके निधि, प्रभुराज !
हम अपने सब पापोंके लिए पश्चात्ताप करते हैं । हर एक विचारके लिए जो असत्य, अनुचित या गंदा था; हर एक बोले हुए शब्दके लिए जिसे बोलना हमें उचित न था; और हर एक कर्मके लिए जिसे करना हमें उचित न था ।
स्वार्थसे प्रेरित हर एक कर्म, शब्द तथा विचारके लिए; तथा द्वेष-प्रेरित हर एक कर्म, शब्द और विचारके लिए हम पश्चात्ताप करते हैं ।
विशेषकर हर एक कामुक विचार तथा क्रियाके लिए; ऐसे हर एक वचनके लिए जिसको हमने पूरा नहीं किया; सब असत्य वचनोंके लिये, और सभी निंदा, पाखण्ड, दंभ या लोगोंके पीछे उनके दोष बतानेके लिए -
हम अनुताप करते हैं,
और खास कर, दूसरोंका नाश करनेवाले हर एक कर्मके लिए, दूसरों को दुख देनेवाले हर एक शब्द तथा कर्मके लिए; तथा दूसरों पर दुख गिरनेकी इच्छा करनेके लिए, हम अनुताप करते हैं ।
हे प्रभुराज ! आप हम पर असीम दया करके, हमारे किये हुए पापोंको क्षमा कीजिए और वैसे ही, आपकी मर्जीके अनुसार विचार करनेमें, बोलनेमे तथा कार्य करनेमें, जो हमारी असमर्थता सदा रहती आयी है, उसको भी क्षमा कीजिए;
यही हमारी आपसे प्रार्थना है ।

मेहेरबाबा के मंडलीजन
एवं प्रेमीजनों के लिए प्रार्थना
(मेहेरबाबाने दी हुवी)

प्रियतम परमात्मा ! हमारी ऐसी सहायता कर कि
हम तुझसे अधिकाधिक प्रेम करें;
और अधिक, और अधिक, और फिर भी उससे भी अधिक प्रेम करें,
जब तक कि हम तुझमें मिलकर एक हो जानेके पात्र बन जाय,
और तू हम सबकी ऐसी सहायता कर कि हम अन्त अन्त तक
प्रियतम बाबाका दामन दृढ़तासे पकड़े रहें ।